Chapter. 7

अध्याय-7

आधुनिक राजस्थानी ब्रजभाषा काव्य समीक्षा

सप्तम अध्याय

आधुनिक राजस्थानी ब्रजभाषा काव्य समीक्षा

विगत अध्यायों में आधुनिक राजस्थानी ब्रजभाषा काव्य के बाहरी स्वरूप का दर्शन हम कर चुके हैं, कि ब्रजभाषा साहित्य लेखन में राजस्थनी साहित्यकारों की बड़ी अहम् भूमिका रही हैं। ब्रजभाषा साहित्य अकादमी जयपुर के सौजन्य से अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। जिनमें ज्ञात एवं अल्पज्ञात अनेक वरिष्ठ रचनाकारों की उत्कृष्ठ ब्रजभाषा रचनाओं से साहित्य जगत परिचित हुआ है।

समीक्षा के निष्कर्ष पर यदि देखा जाय तो राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकारों का प्रभाव सम्प्रती ब्रजक्षेत्र के रचनाकारों से भी परिमाण और परिणाम में कहीं अधिक उल्लेखनिय एवं श्रेष्ठ है। राष्ट्रीय स्तर पर ब्रजभाषा के वरिष्ठ साहित्यकारों में डॉ. जगदीश गुप्त, सोमठाकुर, ब्रजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, विष्णु विराट, आत्म प्रकाश शुक्ल आदि यत्किचत् ही नाम गणीय है। जिन की अनेक साहित्य ब्रजभाषा कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है। तथा ब्रजभाषा लेखन में राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान हो चुका है। परम्परति रूप से काव्य की समीक्षा के निष्कर्ष में रस, अलंकार, पिंगल, भाषा, छंद, भाव, अनुभाव काव्यगुण-दोष वर्णीत आदि को समिक्षत किया जाता रहा। आधुनिक ब्रजभाषा साहित्य की समीक्षा के लिए कुछ नए आयाम भी सम्प्रस्ति हुए हैं जिनमें मुख्य निम्न लिखित हैं।

आधुनिक बोध :

आधुनिक बोध का प्रारम्भकाल भारतेन्दु युग से ही माना जाता हैं इस से पूर्वकालों में ब्रजभाषा कविता के क्षेत्र में जिन विषयों को ग्रहण किया गया भारतेन्दुयुग में उन से इतर विषय विषयों पर लिखा गया जिनमें कवियों ने सहजता से स्वीकार करते हुए अपनी प्रगतिशील विचारधारा को प्रस्तुत किया। जिसमें भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् पैदा हुई समस्याओं का वर्णन किया। जिनमें सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक सभी समस्याओं की ओर ध्यान रखते हुए अपनी प्रगतीशील विचारधार को दर्शाया। जिनमें मुख्य है। महँगाई, भष्ट्राचार, रिश्वत खोरी, भ्रष्टअधिकारी, नेता, पाश्चात्य संस्कृति-भाषा का प्रभाव, बदलता परिवेश आदि को राजस्थान ब्रजभाषा कविरत्नों ने प्रस्तुत किया जिनके कुछ उदाहरण द्रष्टाव्य है। 'श्रीमती माधुरी शास्त्री'

महँगाई

जीवन जीनौ है कठिन, बढ़ी टैक्स की बाढ़।
महँगाई नैं और हू, दियौ कचूमर काढ़॥
अदना से या मनुज पै, भारी भरकम टैक्स।
पिसौ जात है बोझ सौ, भूल्यौ सकल रिलैक्स॥ [1]

इसी प्रकार 'पं. रमेश चन्द्र भट्ट' 'चन्देश' जी ने 'परस' शीर्षक देते हुए आधुनिक भावबोध को कविता के रूप में दर्शाया उदाहरण द्रष्टाव्य है -

प्रतिदिनां
पुनर्जन्म हौबे ऐ।
विसवास के प्रमान कौ
किंतु सायं कौ
महहदा
पत्थर युगी कब्रिस्तान
बन जावै ए नयौ इतिहास
धर्मान्ध रूढ़िवादिता कौ
जे हमें खाय रयौ है।
अनदेखी बातन के पीछै

उन्मत परस
कुए ते निकसवे कौ अहसास मांय
उजालों पै पहरौ
बैठ इदै इरौं
एक केवल एक
विकास के लिए॥ [2]

इस प्रकार आधुनिक युग की बुराइयों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए विभिन्न विषयों को अपने काव्यकला द्वारा दर्शाया।

सामाजिक संचेतना

समय के साथ-साथ लोगों की विचारधारा और परिस्थितियों में बदलाव आता हैं, जो कि एक नये प्रगतिशील समाज के लिए आवश्यक हैं जिसमें ब्रजभाषा के कवियों का अत्यधिक योगदान रहा है। हमारी पुरानी कुछ मान्यताए, ऐसी है, जो मानव समाज के लिए हितकारक है उन मान्यताओं का विरोध कर समाज में नई चेतना का प्रसार करने के लिए कवियों ने दहेजप्रथा, विधवा-विवाह, सतीप्रथा, नारी शिक्षा, शिक्षा का महत्व, जैसे विषयों पर लिखा जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

नारी शिक्षा

नारी शिक्षा वो लिये लगा रहे सब जोर
बिना पढ़ी नारी यहाँ रहती कई करोर॥
कन्या जो पढ़ जाँय तो सुधर जाँय सब काम।
सुधर जायगौ देश ये ऊँचौ होवै नाम॥
आरक्षण नारीन कूँ है विधान अनुकूल।
नारी उन्नति कौ यहाँ खिलै अनौखौ फूल॥
परदा प्रथा हटाइये होबै याते हानि।
लखौ पुराने ग्रन्थ सब बात सकोगे जान॥[3]

इसी प्रकार किशनवीर यादव 'ब्रजवासी' जी ने दहेज के कारण उत्पन्न ही रही समस्याओं को उजागर करते हुए आज के नौजवानों को सचेत किया है। उदाहरण द्रष्टव्य है। जिसमें कवि ने अपनी भक्तिभावना को प्रस्तुत करते हुए दहेज से नारी को

बचाने का आग्रह ब्रजनंदन से किया है -

आज समाज कलंकित है करते नित पाप बड़े व्याभिचारी।
लोभ दहेज बढ़ौ इतनौ पजराय दई सुकुमारी बिचारी।।
हाल बिहाल भए इतने अभ देख दशा सहमे नर-नारी।
आन सहाय करौ ब्रजनंदन भारत कूँ बस आस तिहारी।।[4]

इस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने सामाजिक ढ़ाँचे में एक नई विचारधारा के प्रवाह को अपने काव्य द्वारा प्रवाहमान करते हुए समाजिक संचेतना के स्वरों को रचा।

संवेदना का प्रभाव

वेदना कविता की जननी हैं बिना वेंदना के काव्य का कोई अर्थ ही नहीं है। शृंगार, भक्ति, रीति,नीति और आधुनिक सभी काव्य में संवेदना का पुट अवश्य विद्रमान होता है। कवि पंत ने कहां है **'वियोगी होगा पहला कवि आह से निकला होगा गान'** [5]

यही वेदना अपने ईश्वर, प्रियतम्, पुत्र, या देश के प्रति किसी भी रूप में होगी किन्तु उसमें अपने के प्रति संवेदना का भाव समपर्ण, वियोग, खो देने का भाव अवश्य होगा। राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने इसी प्रकार के संवेदना के भावों को अपने पुत्र को खो चुकी माता के हृदय की वेदना, वियोंगी नायिका की वेदना, देश के वीरों के बलिदान की वेंदना, अकाल और बाढ़ की स्थिति का वर्णन करते हुए अपनी सवेदनाओं को प्रकट किया। जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। 'श्री दामोदर लाल तिवारी' जी ने 'समस्या पीर' में अपने शहीद पुत्र को खो चुकी माता के वेदना के प्रारुप को अपनी सवेंदना द्वारा व्यक्त किया है। उदाहरण :

पैदा करियो मात तू, पूत कोख ते वीर।
अपनौ सीस चढ़ाय कै, हरैं तुम्हारी पीर।।
पूत सपूतन में सदाँ होतौ सबकौ सीर।
पर-सेवा उपकार कर, मेटत है बे पीर।। [6]

इसी प्रकार 'दामोदरजी' ने 1996 की बाढ़ का चित्रण करते हुए अपनी सवेदना को इस प्रकार व्यक्त किया है।

वर्षा नै गजब कियौ, आई अति जोर सौं जो,
मरुभूमि राजस्थान, कोप दिखलाई है।
मच गई हाहाकार, पानी के प्रभाव ते ही,
जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर धाई है ।।[7]

इस प्रकार 'श्री शंकर लाल शर्मा दीपक' ने इसी प्रकार बुढ़ापै की पीड़ा को अपनी सवेदनाओं द्वारा इस प्रकार लिखा है कि बुढ़ापै में कोई कदर नही करता हर जगह अपमान होता हैं, बिमारी पीछा नहीं छोड़ती किसी का साथ नहीं शारीारिक, मानसिक सभी तरह से परेशान रहते हैं इन्हीं को ब्रजभाषा में इस प्रकार लिखा हैं, उइदाहरण द्रष्टाव्य है।

बुढ़ापै में देखौ आज, कोऊ ना कदर करै,
छोटी-छोटी बातन पै, होय अपमान है।
उठौ-बैठौ नाय नहीं, चलबै की कहा चलै,
रात-दिन खांसी उटै, रोगन की खान है।
आँखन ते दीखै नाय, कान दोऊ बहरे भये,
दाढ़ दांत बोल गएँ, घंटौ खान पान है।
मानत न सुत कह्यौ, दारा हू गिदानैं नाँय,
भैया हूँ ना संग देत, कैसे बचै जान है।[8]

इस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने अपनी सवेंदनाओं को काव्य के माध्यम से व्यक्त किया।

आत्मिय संबंधो का लगाव

भारतीय साहित्य के सम्बन्धों में कई निहीत परम्परा अपने सशक्त रूप को जन्म देती हैं, चाहें रूप का आधार भाव से हो, सवेंदनाओं से हो या फिर आत्मियता का बोध कराता हो, इसके अन्तर्गत कई सशक्त व्यापक काव्य की रचनाओं में ब्रजभाषा के माध्यम से इन सम्बन्धों के मान सम्मान के साथ एक नया आयाम दिया गया है। इसके अन्तर्गत ब्रजभाषा के गीत और भाव भाषा की मींमासा पर भारतीय चिन्तन का स्वरूप देखने को मिलता है। वात्सल्य प्रेम, पति-पत्नि का सम्बन्ध, भाई-बहन की प्रगड़तां, और माता-पिता यह सम्बन्ध समाज के और परिवार के स्थाई दायित्व के

मूल आधार है। जिसका राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने अपने काव्यों के माध्यम से आत्मिय सम्बन्धों को उजागर किया है। कुछ उदाहरण द्रष्टाव्य है।

'श्रीमती माधुरी शास्त्री'जी ने पति-पत्नि के कोमल संवेदनात्मक पवित्र और उज्वल रिश्तें को रेशम की डोर की उपमा देते हुए रिश्ते का सावधानी पूर्वक निर्वाह करने का संदेश दिया है -

पति-पत्नी सबंध हैं काची रेसम डोर।
फूँकि-फँकि रखनौ कदम, उलझे मिलै न छोर॥ [9]

'श्रीमती शान्ति साधिका' जी ने 'पालना' में वात्सल्य प्रेम का वर्णन करते हुए माता-पिता के अपने पुत्र के प्रति का वर्णन किया है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

सोने कौ पलना, मोतिपहन की डोरी।
फूलन कौ पलना, रेसन की डोरी।
झूले नन्द-नन्द झुलावै नन्द गोरी॥
सोने को पलने रे.... [10]

इस प्रकार आत्मिय संबन्धों को उजागर करते हुए उन के भावों, संवेदनाओं को राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने बहुत ही सुन्दर रुप से व्यक्त किया।

जमीन से जुड़ाव

कवि अपने काव्य द्वारा अपनी संस्कृति, परम्परा के सौष्ठ को व्यक्त करता है और उस के हो रहे ह्रास को भी सत्य रूप से प्रकट करते हुए अपने कविकर्म को निभाता है। इसी प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने राजस्थान से जुड़े होने के कारण अपनी जमीन के प्रति प्रेम को काव्य के माध्यम द्वारा दर्शाया है। राजस्थान की संस्कृति, परम्परा जैसे होली, दीवाली, प्राकृतिक सौन्दर्य, आदि का वर्णन करते हुए अपने जमीन के प्रति प्रेम को दर्शाया साथ ही आधुनिकरण के कारण नए फैशन और भाषा के कारण संस्कृति, परम्परा के हो रहे पतन को देखते हुए लोगो को सचेत भी किया जिन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है। 'श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी' जी ने 'राजस्थान' शीर्षक देते हुए राजस्थान के सौन्दर्य, बलिदान और वीरों का वर्णन करते हुए अपने जमीन के प्रति प्रेम को दर्शाया। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

अरावली अरू सतपुड़ा, पौरूष प्रबल प्रदत्त।

रग रग में बलिदान कौ, रजपूतानी रक्त॥

कन-कन सुचि अभियान जुत, रग रग भैया प्रेम।

बलिदान की अमर यू राजस्थानी क्षेत्र॥

हँस हँस के जौहर करै, ललक-चढ़ावै प्रान।

बलिवेदी की सुचि धरा राजस्थान महान॥[11]

इसी प्रकार 'श्री रत्नगर्भ तैलंग देर'जी ने जयपुर के गुलाबी सौन्दर्य को ब्रजभाषा में बहुत ही सुन्दर रूप में वर्णित किया है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

हाट किनारे खाट बांस औ निवारखारे

सरस मिठाईवारे कहीं मिर्चीवारे हैं॥

जालिन में सजे खुब जेवर अनेक भाँत

बैठे साहूकार कहूं बड़ी तोंदवारे हैं॥

धृत-तेलवारे कहूँ साग फेलवारे कहूँ

कहूँ पै किनारी कहूँ बासन सँभारे है।

लाट के सहारे रंगवारे औ मसीन वारे

अतर फुलेलवारे कहूं फूलवारे हैं॥[12]

इस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने अपनी जमीन से जुड़े भावों को काव्य के माध्यम से व्यक्त करते हुए अपनी भूमि, सस्कृति और परम्परा का गुण गान किया।

मातृभूमि और राष्ट्रीय सचेतना से संलग्नता

राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने अपनी संस्कृति परम्परा के प्रेम का वर्णन करने के साथ-साथ मातृभूमि के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हुए राष्ट्रीय सचेतना के स्वरों को अपने काव्य द्वारा व्यक्त किया। मातृभूमि के प्रेम को भारत की संस्कृति, परम्परा का गान, त्यौहारों का वर्णन, भारतके सपूतों का वर्णन कर अपने मातृप्रेम को, दर्शाया वही दूसरी और क्रान्ति के स्वरों, अग्रेजों के खिलाफ, पाश्चात्य संस्कृति का विरोध कर राष्ट्रीय सचेतना के स्वरो को रचा। राष्ट्र की हर एक चीज से अपना प्रेम व्यक्त किया चाहे वह प्रकृति हो या संस्कृति इसी प्रकार 'कवि दामोदर लाल तिवारी'

जी ने अपने राष्ट्रभाषा के प्रेम को व्यक्त करते है हुए लिखा है-

दुःख की तौ बात यह, हिन्दी जब राष्ट्र भाषा,
शिक्षण में अनिवार्य क्यों ना बनि पाई है।
उत्तर ते दक्षिण लौ, पूरब ते पछां तॉंनू,
एकई आदेस कर, जाय पढ़बाई है।।[13]

इसी प्रकार देश के गौरवमय इतिहास पर गर्व करते हुए देश की उन्नति और सुख-शान्ति और एकता का संदेश देते हुए लिखा है।

होय राष्ट्रहित सर्वेपरि, सबकी रहै सद्भावना।
सब भ्रात हिल-मिल कै रहै, ऐसी करें हम कामना।।
उन्नति हो अपने देस की, सुख सम्पदा बढ़ती रहै।
ई देस घर है सबहई कौ यो प्रेम की सरिता बहै।।[14]

इस प्रकार मातृ प्रेम को व्यक्त किया तो वही दूसरी और अंग्रेजों के खिलाफ, भष्ट्राचार, राजनीति के प्रपंच का वर्णन करते हुए राष्ट्रीय सचेतना के स्वरों को रच कर लोगो को जागृत किया। जिस के अन्तर्गत आधुनिककरण के दोष, प्रदूषण जैसे विषयों पर भी लिखा उसी के कुछ उदाहरण इस प्रकार है। श्री कमलाकर तैलंग 'कमल' जी ने अंग्रेजों को ललकारते हुए इस प्रकार लिखा है -

सुने विदेशी लोग, बात ये एक हमारी।
वापिस घर कौ करै जायबे की तैयारी।
हमतौ इहां सुतंत्र होइकै रहिबौ चाहत।
भारत अपनी सही हवा में बहिबौ चाहत।[15]

'माधुरी' जी ने देश की हालत पर व्यंग्य करते हुए देश के विकास पर व्यंग्य करते हुए राष्ट्रीय सचेंतना के स्वरो को व्यक्त किया उदाहरण द्रष्टाव्य है -

कौन कहै या देस मे, है विकास कमजोर।
पैले लेत हजार हे, अब लै लाख-करोर।
सोने कौ ये देस है धन दौलत की खान।
दोऊ हाथन लूटिये, जब लौं घट में प्रान।।
उपवन बोय सुमन हे उग आये झंकाड़।

खेतन में निपजै कहा, खेत खा रही बाड़।।[16]

इस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने अपने काव्य द्वारा मातृभूमि के प्रेम को दर्शाते हुए राष्ट्रीय सचेतना को अपने काव्य द्वारा व्यक्त किया। जो कि उन्नत भारत और देश के लिए आधार स्तभ है।

सामुहिक दुःख दर्दो का प्रदर्शन

आधुनिक ब्रजभाषा शृंखला के अन्तर्गत कवियों ने अपने विचार कुंज में कई शब्दों को वैचारिक शक्ति प्रदान की हैं, जो समाज के अन्दर दुःख, सुख की परिपक्वता को भिन्न-भिन्न रूप से एक नए अयाम की ओर मुखरित होते हैं। जिस के फलस्वरूप कभी व्यक्ति को समाज का सामना करना पड़ता हैं कभी समाज की संस्कृति, रीति - रिवाज, भाव-विचार आदि के उन्मूलन के साथ वह अपना व्यय कर रहे हैं और यही वजह है कि राजस्थान के ब्रजभाषा कवि के प्रति आकृष्ठ कवि ने अपने भाव की मींमासा में समाज के परिवार का एक अंग मानते हुए अपने काव्य में अपने आस-पास हो रहे अधंविश्वास, कुरीतियों, विकृतियो, नशा, बेरोजगारी, आंतकवाद, जातिवाद, धार्मिक झगड़े, नारी उत्पीड़न, घूसखोरी जैसे विषयों पर लिख कर अपने भावों को काव्य के माध्यम से व्यक्त किया उसी के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

'श्रीमती माधुरी शास्त्री' जी ने गरीबी से त्रस्त दीन-हीन दशा का करुण द्रश्य का चित्रण करते हुए ब्रजनाथ से उन की रक्षा करने की प्रार्थना की है उदाहरण द्रष्टाव्य है -

हे रे, ब्रजनात तू अनाथन सनाथ करि,
द्वार-द्वार दौरि रहे, देखो दुखियारे से।
खावन कूँ रोटी नाँहि तन पै लँगोटी नाँहि,
नैन बहे रोज बरसात के पनारे से।
पेटन सौ पीठ लगी पींजरा है हाडंन के,
ज्वानी में बुढ़ापे कौ दिखात है नजारें से।
आकैं सुध लैलैं मेरे देस की अनीति मिटै,
अभावन मारे भए, सूख कै छुआरे से।[17]

इसी प्रकार 'पं. बालीराम शर्मा' ने अपने काव्य में समाजिक दुःख दर्द को

प्रस्तुत करते हुए आज पढ़े-लिखे नौजवान की उस स्थिती का मार्मिक चित्रण किया है जिसमें पढ़ा-लिखा होने के बावजूत नौकरी न मिलने पर उस की दयनीय स्थिती और लूट को व्यक्त किया है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

आज कौ पढ़वैया तौ द्वार द्वार डोलत है
कभी रिश्वतअली सौ जाय बतरावैगौ।
या हो खुशामद बेग या सिफारसवान मिलै
उनके इ घर जाय पैर सतरावैगौ।
नवीने सामान कभी देखे न सुनाई परै
जनता सौ लूट-लूट आप घर लावैगौ। [18]

इस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने अपने भावों को व्यक्ति के प्रति अपने दर्द को चाहे वह आर्थिक या सामाजिक कोई भी क्षेत्र से हो उस का मार्मिक चित्रण करते हुए सत्य का अकिंत किया।

राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय फलक पर कथ्य का प्रसार

राजस्थान ब्रजभाषा साहित्य के अन्तर्गत भाषा की शुद्धता और उस की काव्य रचना में कई अव्यवों का समावेश होता है। जिस के अन्तर्गत राजस्थान के कई कवियों ने अपना विशिष्ट योगदान देते हुए राष्ट्र के लिए उस पर अपना वर्चस्व हासिल हो उसके लिए उन कवियों ने राष्ट्रीयता के प्रचार-प्रसार के लिए भारत की परम्परा को तो अपने काव्य में स्थान दिया है ही साथ में उन्होंने काव्य के माध्यम से अन्तराष्ट्रीय स्तर पर गद्य और पद्य को एक नई दिशा प्रदान की। जिसके फलस्वरूप इस कथन में कोई अतिश्योक्ति नही हैं कि राजस्थान नहीं हैं कि राजस्थान के कवियों ने अपने भावों को राष्ट्र के सम्मुख पूर्ण रूप से स्थापित कर दिया, राजस्थान के उक्त कवियों में अग्रेजी भाषा के कवि **श्री आई. के. शर्मा** ने विश्व कविता के दौरान पेरिस में युनेस्कों के अन्तर्गत एक साधारण सभा के आयोजन के दौरान उन्होंने अपना यह विचार प्रस्तुत किया कि 21 मार्च को हर साल 'विश्व कविता दिवस' मनाया जायगा उन की इस घोषणा से चारों ओर एक अंकुरित प्रभाव का भाव परिलक्षित हुआ जो कि सेन्टफ्रान्सीस्कों में बाईपोशगर के अन्तर्गत सयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई। इस स्थापना का मूल उद्देश्य यही था कि संसार में आंतकवाद का जो खूनी पंजा अपना खेल खेल

रहा है उस पंजे से मानव मात्र को बचा कर अन्तराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद को पूर्ण रूप से खत्म करने का काव्य के माध्यम से आन्दोलन को प्रारम्भ किया उन्होंने अपने काव्य द्वारा विश्व स्तर पर प्रचार प्रसार में लगे रहे।

परम्परागत द्रष्टि से देखा जाय राजस्थान के कवियों ने विश्वस्तर पर कई काव्यों का सृजन किया जिस से कि पूरे संसार में एक मंच होकर संस्कृति और एकता का पुनः निर्माण हो सके। 'श्री पूरनलाल गंहलौत' जी के उक्त काव्य में सुभाष चन्द्र बोस और हिटलर के बातचित को कवि ने छन्द के जरिए अपने भाव को व्यक्ति किया उदाहरण व्यक्त है।

सुभाष

बहरतबील – **एजी हिटलर बड़ौ देश भारत मेरौ,**
ये फिरंगी बडौ दुक्ख पहुँचा रहे।
प्यारे बापू भी भारी परेशान है,
या गुलामी सौ नर–नारि अकुला रहे॥ [19]

* * *

हिटलर

बहरतबील– **आप चिन्ता मती कीजिये बोसजी**
ये तौ बन्दर हैं घुड़की तो दिखलायेंगे।
तुम डरौगे तौ तुमको ये डर पायेंगे,
चोट खाकैं तुरत छोड़, भग जायेंगे॥ [20]

युग द्रष्टा कवियों ने विश्व स्तर पर अपने भाव तो प्रदर्शित किए ही साथ ही साथ अपने पड़ोसी देश को भी अपने काव्य के पुष्प में बाँध के रखा और यह अहसास दिलाया कि 'तुम में भी हम है, हम में भी तुम हो फिर यह पाकिस्तान' कैसा? यह भाव की मींमासा राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार करने का एक मात्र साधन ना होकर पूरा विश्व एक जुट रहे यह लक्ष्य 'श्रीमती माधुरी शास्त्री' के इस काव्य से द्रष्टिगोचर होता है।

पाक तेरे नापाक इरादे

पाक तेरे नापाक इरादे पूरे कबौं न होवे दिंगे,

जे कस्मीर हमारौ हिस्सा याकूँ कबहु न तौं कूं दिंगे।

बैठौ है जा जगै पै तू वो हू गैल हमाई है,

और अधिक लालच की तोकूँ जमकैं सजा हम दिंगे।

खा-खाकै मुरगा मुरगी तू समझै है खुद कूँ बलवान

तो जैसे मक्कारन कूँ पैरन तरे कुचल दिंगे। [21]

इस प्रकार इसे अनुरोध या रौद्र की भाषा कहे या फिर देश को आह्वान करने का काव्य के माध्यम से प्रेरणा कहे हर तरह से ब्रजभाषा के कवियों ने चाहे राष्ट्रीय हो या अन्तराष्ट्रीय अपनी भावनाओं को ब्रजभाषा काव्य द्वारा प्रचार प्रसार करते रहे।

जहां तक परम्परित समीक्षा मूल्यों का प्रश्न हैं वहाँ इस कालवधि के साहित्य में रस, अलंकार आदि का समन्वय आरोपित सयास या पूर्वाग्रही ना होकर प्राकृतिक एवं सहज रूप से समन्वित हुआ हैं शब्दालंकार एवं अर्थालंकार बड़े ही स्वाभाविक रूप से आधुनिक ब्रजकाव्य में समाहित हुए है जिनमें विशेषकर अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, संदेह, व्यतिरेक, अतिश्योक्ति, प्रतिक, द्रष्टान्त, समासोक्ति तथा अन्योक्ति आदि अलंकारों का अनुभव किया जा सकता है। कुछ अंलकारो का उदाहरण इस प्रकार है।-

यमक

विद्वानों ने एक शब्द का दो या दो से अधिक बार भिन्न अर्थो के प्रयोग को यमक की संज्ञा दी है। राजस्थान ब्रजभाषा के अधिकतर कवियोंने इस का प्रयोग किया है। 'श्री पूरण लाल गहलौत' द्वारा रचित यह उदाहरण द्रष्टाव्य है।

विजया विजय प्रदा 'प्रवर' सुखदा सुठि दुःख सर्व।

विजया कौ, नाहिं विजय कौ, विजयादसमी पर्व।। [22]

यहाँ विजया और विजय शब्द का प्रयोग जीत और पर्व के लिए हुआ है।

श्लैष अलंकार

श्लैष अलंकार में एक शब्द में एक से अधिक अर्थ छिपे होते हैं उदाहरण द्रष्टाव्य है।

चीर चुरायवौं छोड़ि कै देखी लैं,

चीर हिय को अहिर कैं जाय।।[23]

यहां पहले चीर का अर्थ हैं 'वस्त्र' और दूसरे 'चीर' का अर्थ है- चीरना फाड़ना। इसी प्रकार -

का करि तैंने जो का करि आँख में।

कामरी वारे पर कामरी जात है। [24]

यहाँ काकरी का अर्थ हैं-ककण और दूसरी अर्थ है- क्या किया, इसी तरह कामरी यानि कम्बल दूसरा क्या री मरी जा रही है।

अनुप्रास

एक ही वर्ण की बार-बार आवृति को अनुप्रास स्वीकार किया है। इस का प्रयोग प्राचीनकाल, मध्यकालिन कवियों ने बहुत्यास किया है। पद्माकर का छन्द द्रष्टाव्य है-

कूलन में केलिन में कछारन में कुजन में,
क्यारिन में कलिन-कलीन किलकंत है।
कहैं पद्माकर परागन में पौंन हूँ में,
पानन में पिक में पलासन पगन्त है।
द्वार में दिसान में दुनी में देस देसन में
देखो दीप दीपन में दीपत दिगन्त है।
बीथिन में ब्रज में नवेलिन बेलिन में,
बागन में बनन में बगरयो बसन्त है।। [25]

यह 'क' वर्ण, 'प' वर्ण और, 'ब' वर्ण की आवृति बार-बार हुई है।

राजस्थान ब्रजभाषा काव्य के कवि 'डॉ. राम कृष्ण शर्मा' द्वारा रचित उदाहरण द्रष्टाव्य है।

'सोहत सुभग सर सरित सलिल दूरे।'
'छित ते छितीस लौ छछारे छबि छैया है।' [26]

यहां 'स' वर्ण और 'छ' वर्ण की आवृति बार बार हुई है।

उपमा

जहाँ समान धर्म स्वभाव दशा गुण, शोभा, आदि के आधार पर एक पदार्थ की तुलना दूसरे पदार्थ से की जाये वहा उपमा अलंकार माना जाता है। 'डॉ. सियाराम

सक्सैना' द्वारा रचित उदाहरण द्रष्टाव्य है -

लघु कर्मन के बड़े फल चाहत हौ अनमेला।

धरासायि हवै रहहुगे ज्यों कददू की बेल॥ [27]

*** * ***

प्रेम रँग्यौ नाच्यौ करै मन मयूर सौ साँच। [28]

उपरि निर्दिष्ट छंदों की पंक्तियों में प्रथम में छोटे कर्म को कददू की बेल और बड़ा फल को कद उपमा देते हुए समान आकार के आधार पर उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है।

इसी प्रकार 'डॉ. राम कृष्ण शर्मा' द्वारा रचित उदाहरण द्रष्टाव्य है -

जीवन कुटुंब जैसैं लिख्यौ ऐ उधान कोउ

नर अरू नारी ज्यों सुमन विकसैया है।

सिसु वृन्द विकच कलित कलिका सेसौ हैं।

झोंकन समीर सौ सुरमि सरसैया हैं॥ [29]

रूपक

जब उपमेय पर उपमान का आरोप कर दिया जाता हैं, अर्थात उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है तब रूपक अलंकार होता है। कवियों ने इस का भी अपने काव्य में सुन्दर रुप से प्रयोग किया है। 'डॉ. सियाराम सक्सैना'जी द्वारा रचित उदाहरण द्रष्टाव्य है।

देस-प्रेम-राकेस पति में पेख उदोत।

नेह-ज्वार बाल हदै बढ़ि बढ़ि ऊँचौ होतु॥

रुप सिंधु महँ खिल्यौ सुधि राधानन-अरविन्द।

तेहि मरन्द मँडरात नित नन्दानन्द-मिलिन्द॥[30]

'डॉ. राम कृष्ण शर्मा' द्वारा रचित रूपक अलंकार का उदाहरण इस प्रकार है।

धरा की नवोढ़ा जहाँ हरित दुकूल धारे,

प्यारे नम हरे-हरे हिये में लजैया है। [31]

'नवनीत चतुर्वेदी' द्वारा रचित रूपक अंलकार का उदाहरण द्रष्टाव्य है -

चंद मुख चांदनी चकोर -स्याम सुन्दर की।
मुनिजन मानस निवास के परन की॥[32]

इसमें मुख अरविंद चंद्रमुख उपमानो का उपमेय पर आरोपण साभिप्राय किया है।

- उत्प्रेक्षा

जब उपमेय की उपमान से संभावना की जाए तब यह अलंकार होता है। डॉ. सियाराम सक्सैनाजी द्वारा रचित छंद में द्रष्टाव्य है।

माछर-गन अरू प्रिया भहँ मानहुँ परिगई होरि।
भुन-भुन-भुन जल-भुन वचन भरहिं स्त्रवन लौं दौरि॥[33]

कविरत्न नवनीत चतुर्वेदी जी उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। एक उदाहरण द्रष्टाव्य है।-

मनि नुपुर नव नागरि, सोभित पग अंगुरीन
मानहु ये रति रंग के चातक कोफ नवीन॥[34]

इस छंद में नायकि‍ा के मणियुक्त नुपुर ऐसे प्रतीत होते हैं मानो रतिरंग के चातक कोफ हो।

- अन्योक्ति

जहाँ किसी की बात किसी और पर डाल कर कही जाय, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। (अन्य+उक्ति) इस संदर्भ में बिहारी का नाम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। रीतिकालिन कवियों का यह प्रिय अलंकार माना जाता है।

नवनीत चतुर्वेदी द्वारा रचित अन्योक्ति का उदाहरण द्रष्टाव्य है।

मधुकर कौन मालती को मधुपान कियौ,
अरून अनौखे नैन बैंन प्रतिकूले हौ।
'नवनीत' चाहक भये हौं कौन-कौन हू के
गौन करिबे कौं इत उत तन तूल हौ।
चाह भरे चम्पक बिचारे चपत तोसो,
चलचल पातन प्रमाद रस फूले हौ।
कंटकन बीधे गीधे फिरत कहूँ के कहूँ,

कौन भ्रम बेलिन भ्रमर आजु भूले हौं॥ [35]

इसमें नायक की द्वन्द्वात्मक स्थिति अप्रस्तुत मधुकर के माध्यम से बतलाई गई है। तथा अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का बोध।

– विरोधाभास

जहाँ पर क्रिया गुण या पदार्थ में विरोध तो दिखाई पड़े पर वास्तव में विरोध न हो। 'डॉ. सियाराम सक्सैना' जी ने विरोधाभास अलंकार का बहुत अच्छा प्रयोग किया है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

रीति काल की रीति अस परम विचित्र चिहनारि।
सेनापति स्मर, समर, नहि, भूषन समर, न नारि॥[36]

इस प्रकार से ब्रजभाषा काव्य में अनेको कवियों ने अनेक अंलकारों को प्रयोग किया। राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने भी अपनी कला चतुर्यता के द्वारा अलंकार का प्रयोग कर काव्य में सौदर्यका पुट दिया। जिस के द्वारा अपनी सूक्ष्म अनुभूतियों को सजा-संवारकर, सरलता, स्वाभाविकता के साथ अलंकार द्वारा व्यक्त किया। जो कि कवि की कौशलता का परिचायक है।

छन्द

काव्य का मनोभाव और उस का आधार लय की क्रमबद्धता पर आश्रित होता है या यह भी कह सकते हैं कि काव्य और छन्द का साथ जैसे चोली दामन का है क्योंकि इसके अन्दर कवि की अपनी भावाभिव्यक्ति का स्वरूप होता है और यही वजह हैं कि छन्द में मधुरता आती हैं और एक नए छन्द को जन्म देते हुए छन्द और कविता का कवि के जरिए उसका भावात्मक रूप सामने आता है। आधुनिक राजस्थान ब्रजभाषा कवियोंने आधिकांशतः सवैय तथा घनाक्षरी छन्दों का प्रयोग किया हैं, सवैया, छन्द की सर्वाधिक लोकप्रियता रसखान से हुई हैं तो घनाक्षरी छन्द की लोकप्रियता मतिराम, देव, पद्माकर आदि से स्थापित हुई हैं। सवैंया जहाँ मात्रिक छन्द है वहाँ घनाक्षरी छन्द वर्ण वृत का छन्द है, इन छन्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार है -

'श्री शंकर लाल 'दीपक'' जी ने विविध छन्दों की रचना की है जैसे अधर नगन मात्रा रहित, त्रिभंगी छन्द, ललित छन्द, भुजंग प्रयात, अनंग शेखर छन्द, पंच चामर (16 वर्ण लघु गुरु), क्षितिज छन्द, अचल धृत छन्द, महा भुजंग प्रयात मोदक

छन्द, महीधर छन्द, नीलचक्र, सुधा निधि मौक्तियदाम, गंगोदक छंद आदि। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

मोदक छन्द

तार दई जिन गौतम की तिय।
तोर सुयेवर चाप वरी सिय।
भक्त हनूमत थे जिनकूं प्रिय।
राम रमापति राख सदा हिय। [37]

इस प्रकार घनाक्षरी छंद ब्रजभाषा कवियों के लिए अत्यन्त ही प्रिय रहा है। श्री राम बाबू रघुराय द्वारा रचित यह छन्द द्रष्टाव्य है।

ए रे मूढ़ मानी दीन दुखियों पै दया कर,
मायां में चूर है मद, मस्त्र फिरै ज्वानी में।
कर सतसंग बेड़ी, काट के कुसंगति की,
नीरस कूं त्याग राम, रस भर बानी में।
कह 'रघुराम' कर काल लै कुठार सदाँ,
चक्कर लगावत है जैसे बैल धानी में।
चेत रे अचेत नीके, कर्म कर नीके कर,
अब हूँ नहि चैतै तौ, जारे भैस पानी में।।[38]

इसी प्रकार सोरठा अर्थात सम (दूसरे और चौथे) चरण में 13 और विषय (पहले और तीसरे) चरणों में 11 मात्राएं होती हैं। जैसे

गज आमन दै ज्ञान, लिखूँ सारदा कृपा सौ।
गुरू नै दियौ विधाव, करी कृपा भरपूर मों।।[39]

सवैया

सवैया की अवधारणा को व्यक्त करने के लिए सवैया के विशेष और वैशक्ष्य को आधार बनातें हुए सवैया को छन्द के आवरण में ढ़ाला जाता है चूंकि सवैया किसी विशेष छन्द का नाम नही है परन्तु छन्द की वैविध्यता को दर्शाने मात्र का यह एक ऐसा प्ररूप हैं जिसमें छन्द को सवैया की तरह पढ़ा जाता हैं चूंकि सवैया में जो छंद होते हैं उसमें मुख्यतः चार चरण होते है जिसमें तीन चरण वाचन के लिए प्रयुक्त होता

है। और चौथा चरण का वाचन मुख्यतः दो बार किया जाता हैं सवैया की इस प्रकार वाचन के कारण इसे सवैया के नाम से अथवा सवैया कहा जाता है। राजस्थान के ब्रजभाषा कवियो ने दुर्मिल, सवैया, किरीट, सवैया, मत्तगयन्द आदि की रचे। उदाहरण-

– सवैया मत्तगयन्द

मानुषता जन के मन हो, जनता सब भाँति सुसील लखावै।
साँन्ति सदाँ उखास करै, जन के मोद अपार दिखावै।
द्वेस न हो जग में 'रघुराय' न चिंतित हों नहिं कोऊ दुख है।
होय सुराज तवै परि पूनै, जबै दिन देखन कूँ यह आवै।।[40]

– सवैया दुर्मिल

करके नित कान्य अनेक नये, नहि धर्म न नीति विचारत है।
तन दीनन कौ सब छीन करै, कर पै कर पै कर झारत है।
मुखिया बन कै लड़वावत सो अपनौ सब कारज सारत है।
श्रुति बोध करौ 'रघुराय' कहै इहि कारन भारत आरत है।।[41]

इस के अतिरिक्त चौपाई, दोहा, बरवै, छप्पय, कुण्ड़लियाँ आदि के अतिरिक्त कुछ लोक छन्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे वहत्वील, लवणी, वीर छन्द, दूबाला चौबाला तथा भजन कीर्तन आदि के लोकाग्रही छन्द कुछ आधुनिक ब्रजभाषा कवियों में नवगीतों के भी प्रयोग किए जिसमें मुख्य से गोपाल प्रसाद मुद्गल, द्वारका प्रसाद, राधागोविन्द पाठक आदि का उल्लेख किया जा सकता है। इस तरह गीतों में नई छन्द सृष्टि का निर्वाह करते हुए कथ्य के अनुसार छन्द की रचना की गई हैं तथा अन्य स्थलों पर परम्परति छन्दों का प्रयोग किया गया है।

काव्य का भाव–पक्ष

ब्रजभाषा साहित्य के वरिष्ठ परम्परा के अन्तर्गत काव्य के स्तर को भावपूर्ण बनाने के लिए और काव्य की सार्थकता के लिए रस के द्वारा काव्य में अर्थ की जो अभिव्यक्ति होती हैं उसके अलग-अलग भाव को उच्चस्त माप दण्ड देने के लिए काव्य के सौदर्य में भाव और रस की प्रधानता का होना अति अनिवार्य है क्योंकि भावपक्ष का एक हिस्सा काव्य के अंगों की भाँति तो दूसरा हिस्सा रस जो काव्य के आत्मा

की स्वरूपता को अकिंत करता हैं चूँकि माना जाता हैं कि सबसे पहले भरत के नाट्य शास्त्र में भाव और रस की प्रधानता मिलती हैं किन्तु अन्य प्रर्वतकों का कहना हैं कि महामुनि द्रुहिण के अनुसार रस सिद्धांत को ही नंदिकेश्वर के काव्य मींमासा के रूप में देखा जाता है चुँकि महामुनि द्रुहि के शोध के कारण ही रस जैसे विषय की उत्पति हुई है।

'एतो ह्यष्टो रसाः प्रोक्ता द्रुहिणेन महात्माना।'[42]

इसके फलस्वरूप रस की शास्त्रीय मींमासा की ओर से भरतमुनि ने भाव और रस के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए है चुकिं रस के उपलक्ष्य में भाव का महत्वपूर्ण स्थान होने के कारण यह कहना उचित ना होगा कि भाव के बिना रस की उत्पति हो सकती है अतः इस तथ्य में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि भाव और रस दोनों का सम्बन्ध भावात्मक तौर पर रस के साथ मिलकर अपने भावों की गहराईयों को व्यक्त करती है। भरत ने भाव एव रस के घनिष्ठ संबंध के विषय में कहां हैं कि-

न भाव हीनोस्ति रसो न भावो रस वर्जितः । [434]

भावों की अनुभूति में संचार का होना अत्यंत आवश्यक होता हैं और यही संचारी भाव ही जब स्थायी भाव के रूप में पुष्ट होते हैं तब काव्य का भाव रस के साथ परिलक्षित होता है। अर्थात वे ही स्थायी भाव रसदशा को प्राप्त होते हैं, इसलिए रस की अनुभूति के लिए भावों अनुभावों की संयोजना अत्यन्त आवश्यक होती है। अर्थात भावो की पुष्टि करने के लिए यह एसे क्षुणक प्रोत्साहित तत्व है। जो भावों को रस मार्ग को और अग्रसर करते है।

रस भावों की सक्षिप्त दशा को सर्वप्रथम व्यक्त करने वाले नाट्य शास्त्र भरतमुनि ने रस का वर्णन साहित्य में तो किया ही लेकिन काव्य के सौंदर्य में भी रस की पराकाष्ठा को विविध आयाम दिए चुकि भरत मुनि ने रति, हास्य, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय, शोक जैसे आठ स्थाई भाव को माना किन्तु भाव की मुद्रा में रस का सम्बन्ध मात्र नाटक और काव्य का प्रमुख अंग में परिवर्तित हो गए चूकिं काव्य भी भोजन के स्वाद के अनुसार ही हैं जिस प्रकार स्वाद की प्रतिक्रिया में स्वाद की अवहेलना होती हैं ठीक उसी प्रकार काव्य रसकी मींमासा में काव्य निरस या निष्फल तभी जिम्मेदार होता हैं जब कोई काव्य में रस का बोध या संचार नही होता

है। चूकिं, आचार्य भामह और दण्डी ने अलंकार को ही सर्वस्व माना किन्तु रस का साथ नही छोड़ा व्रक्रोति सिद्धान्त के आचार्य 'कुन्तक' ने भी काव्य में रस को प्रमुख स्थान दिया जिस के कारण कवियों की वाणी में काव्यरस के द्वारा काव्य को सजीव किया जा सकें इसी सन्दर्भ में आचार्य चिन्तामणि कहते है। कि -

'बत कहाऊ रस में जु है, कवित कहावे सोय।'[44]

अथार्त काव्य चाहे कितना भी महत्वपूर्ण या उच्च एिकरवाला क्यों न हो जब तक उस में रस की प्रधानता नही होती काव्य का अस्तित्व नश्वर की जैसा है। माना जाता है काव्य की आत्मा रस हैं तो उस आत्मा का शरीर काव्य है। इस तथ्य को मानते हुए आचार्य विश्वनाथ महापात्र ने कहा कि -

''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'' [45]

रसयुक्त वाक्य ही काव्य हैं अन्यथा काव्य की स्वरूपता रस के बिना रसहीन है भरतमुनि ने मुख्य चार रस को प्रधानता दी शृंगार , वीर, विभत्स और रौद्र किन्तु इन्ही चार में से और चार रसो की उत्पति हुई जैसे शृंगार से हास्य, वीर से अद्‌भूत, विभत्स से भयकर और रौद्र से करूण चूँकि भरतमुनि ने आठ रसों का वर्णन किया किन्तु भरतमुनि के पश्चात् नौ रस की श्रेणी आई जिसे शान्त रस की उपाधि मिली रसाभास और भावाभास यह सभी भावात्मक स्तर पर रसो की दशा पर प्रयुक्त होते है।

आधुनिक राजस्थानी ब्रजभाषा काव्य के कवियों ने भी काव्य में रसात्मकता का प्रयोग करते हुए विभिन्न रसों के द्वारा भावों को व्यक्त किया जिस में से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। -

1. शृंगार :

शृंगार रस का स्थायी भाव रति अर्थाथ प्रेम। यह संयोग और वियोग दोनों स्थिति में प्रेम का सुन्दर चित्रण किया है, कवियो ने संयोग शृंगार में उद्दीपन के विभावों को व्यक्त करते रहे और वियोग में उद्वेग अनुभव को व्यक्त करते है। नायक, नायिका के मनोभावों को व्यक्त करने में शृंगार रस का अत्यन्त ही शोभनिय योगदान रहा है। उन के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

प्रस्तुत छन्द में श्री रामबाबू रघुराय ने राधा के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए

कवि ने श्रृंगार रस का चित्रण किया है।

सलिल सुदा सों भरे, अति ही अनूप रूप,
कजरारे अरू नारे सील रस वारे हैं।
तीखन दुधारें मान, मीनन के मारे सवै
खेजने लजारे जिमि काम के कटारे हैं।
प्रेम मद वारे कारे, रूप वारे छवि वारे,
'रघुराय' चित्त चोर वारे जू निहारे है।
आरे तम वृन्द चन्द, ज्योति के पिटारे ये,
राधे के अनंग भरे नैन मतवारे है। [46]

श्री गोरी शंकर आर्य जी ने प्रकृति का वर्णन उद्दीपन के रूप में करते हुए सयोंग श्रृंगार का सुन्दर चित्रण किया है।

पावस महँ प्यार पगी प्यारी कही प्यारे सौं,
प्रान प्रिय पधारौ आजं झूलै हिंडोरे में।
स्यामा के सम्मुख स्याम ठाड़ भये डारी थाम,
भय लागै लाली कौ इत उत मचोरे में॥
जावन ते छुपि छुपि जात छैला की छाती में
चापै चतुर आवन में ताकौ झकोरे में।
एक बेर बीजुरी बिलावै जनु बादर में
एक बेर बादर बटोरे ताहिं झोरे में॥ [47]

वियोग वर्णन में कवि विरहणी नायिका के वियोग का मार्मिक चित्रण करते हुए। प्रस्तुत छन्द में कवि ने प्रकृति के द्वारा दुःखो का वर्णन किया है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

उमाड़ि-घुमाड़ि घिरि, कजरारे बरसाये,
झूमि-झूमि बदरा ये, मन में चुभतु हैं।
पिउ-पिउ पपिहरा, रटतु निसि- बासर
बरखा की झड़ीलगी, बीजुरी दिपतु है॥
बहत पवन मन्द, दूर देश मेरौ कन्त
पल-पल आबै सुधि, जियरा जरतु है।

पावस में मिलै पिय, हुलसत सदा हिय,
जुग सम बीतै पल, मन तड़पतु है।। [48]

इस प्रकार कवियों ने आलंबन, उद्दीपन के द्वारा शृंगार रस का वर्णन करते हुए जहां भक्तिकाल में राधा, कृष्ण, गोपियों के मनोभवों का वर्णन करते हुए रचनाएँ रची वही रीतिकाल में नायक-नायिका के मनोभावों द्वारा संयोग-वियोग का वर्णन किया आधुनिक काल में भी शृंगार परक रचनाएँ रची गई। शृंगार को इसलिए रसराज भीकहा जाता है।

हास्य

इस का स्थाई भाव हास होता है। इस में विचित्र आकृति, विचित्र वेशभूषा चेष्टाए देखकर हृदय में विनोदभाव उत्पन्न होता है कवियों ने काव्य में इस का प्रयोग करते हुए व्यंग्यात्मक रूप से अपने भावों को प्रकट किया। राजनीति, नेता, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, जनसंख्या आदि की समस्याओं पर व्यंग्यात्मक रूप से कटाक्ष करते हुए सत्य को प्रस्तुत किया उदाहरण द्रष्टाव्य है। मूल्य हीनता को लेकर व्यंग्यात्म कुँण्डली द्रष्टाव्य है।

पैसा लेकर के नया, घूमा सभी बजार,
दूध दही की कहा चलै, मिलौ न मित्र अचार,
मिलौ न मित्र अचार, बहुत मन में झुँझलायौ,
कौड़ी की दर नांय हाय पैसा कहलायौ।
इससे तो गिरिराज जमाना आवै ऐसा।
जिसकी कीमत होय वही कहलावै पैसा। [49]

श्री किशनवीर यादव में आधुनिक नारी पश्चिम सभ्यता पर व्यंग्यत्मक रूप से इस प्रकार लिखा हैं-

आठवीं पढ़ी है बहू पाम धरा धरै नाँय,
बनी डोलै टिपट्टॉप कऊ कूँ गिदानै ना।
शादी भोजनपारहीन होटल अटैण्ड करै,
भारत की मूल रीति-नीति कूँ पिचानै ना।
हिन्दी बोलबे में याकुँ कैसी लाज आय रही,

तोरै अँगरेजी टाँग ए.बी.सी.डी. जानै ना।

की सभ्यता में एकैं सिहाय रही

कोऊ समझाऔ लाख बू तौ एक मानै ना।। [50]

इस प्रकार हास्य रचनाओं द्वारा आधुनिक समस्याओं को कवियों ने सहज रूप से प्रस्तुत किया इसी श्रृंखला में पैरोडी की भी रचना की गई है।

– करूण

करुण रस का स्थायी भाव शोक है जो हृदय के विकल भाव को प्रकट करता है महाकवि भवभूति ने कहा है

'एको रसः करूण एव निमित्तभेदात्।'

निर्वेद, मोह, अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जड़ता, उन्माद और चिंता करूण रस के संचारी भाव है। इन विभाव, अनुभाव एवं संचारी भावों के योग से करुण-रस की निष्पति होती है। उदाहरण द्रष्टाव्य है। प्रभुदास बैरागी द्वारा रचित -

प्रेमीजन के छोंह पर, रोती अँखियाँ धार।

गंगादास ज्यों राम के, बिछुड़न में नरनार।।[51]

दामोदर लाल तिवारी जी ने बाढ़ का चित्रण (1996) का वर्णन करते हुए अपने भावो को करूण रस द्वारा इस प्रकार लिखा है।-

बहू गए अगवित, मानुस व जीव आदि,

खोजउ करे ते लाश देह की न पाई है।

कछुक तौ मारे गये भूख अरू प्यास तेई,

डूबकैं मरे हैं मदु ऐसैं मौत आई है।।

मच गयौ कोहराम, धीर कौ धरैया नाँय,

बरखा अरू बाढ़ नै, प्रलंय सी दिखाई है। [52]

इस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने अपनी भावनाओं को करुण रसके द्वारा व्यक्त करते हुए विभिन्न विषयों पर काव्य की रचना की जैसे कन्या की वेदना, श्रद्धाजली आदि।

– रौद्र

रौद्र का स्थायी भाव क्रोध है। शत्रु पक्ष वाले अथवा दुष्ट व्यक्ति के क्रिया-कलापों अथवा निन्दा, अपमान आदि के कारण उत्पन्न हुए क्रोध से रौद्र रस की निष्पति होती है। श्री राधाकृष्ण ने अग्रेंजो के खिलाफ क्रान्ति के स्वरों में 'वीर-रोद्र रस के छन्द' की रचना की जिस का उदाहरण द्रष्टाव्य है।

काली आ हरन हेत भार अब भूतल कौ,
क्रांति के करन हेतकोप के कराली अ।
कृष्ण कवि कृपान सौं कटती आरूंड मुंड़,
झुंड़न के झुंड़न पाट मुंड माल वालीआ॥
चाटती आ खप्पर में रूधिर पाटती आ,
खल दल उपाटती रूप विकराली आ।
आज तू भगाजा दुख द्वंद भय भारत कौ,
सिंह पै सवार सज श्रृंगार माँ काली आ॥[53]

इसी प्रकार 'प्रभुदास बैरागी' जी ने रौद्र रस में श्रृंगार का समावेश कर लिखा है उदाहरण द्रष्टाव्य है -

कुच कठोर लावण्य में, नही रीझै दो जून।
गंगादास भेरी सुनी, उतरा आँखो खून॥ [54]

इस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने रौद्र रस में अपने भावों को व्यक्त कर क्रोध को व्यक्त किया।

– वीर

कविराज विश्वनाथ में 'उत्तमप्रकृतिर्वीर' लक्षण देकर वीर रस को अन्य रसों से श्रेष्ठ माना है इस में आलंबन शत्रु अथवा जिसे जीतना हो वह होता है। उसकी चेष्टाएँ, सेना, रण-वाद्य, सेना का कोलाहल, शत्रु या विपक्षी के प्रताप उत्कर्ष आदि का श्रवण इत्यादि उद्दीपन-विभाव होगा। वीर एवं रौद्र दोनों का आलंबन शत्रु होता है। 'इस संबंध में साहित्य दर्पणकार कहते है कि नेत्र तथा मुख का लाल होना, रौद्र रस में होता है, वीर रस में नही क्योंकि वहाँ उत्साह ही स्थायी होता है।'

'श्री पूरणलाल गहलौद' जी ने आजादी के वीरों को प्रोत्साहित करते हुए सब

को लड़ने के लिए तैयार होने को कहते हुए लिखते है -

खून मांगती है आजादी, है जाऔ तुम सब तैयार।
सिर दैकैं आजादी लै लेऔ, कैसौ सुन्दर ई व्यापार।
दस्तखत करौ खून सौं आकैं हवै जाबैं मोकूँ विश्वास।
आजादी लैकैं मानिंगे चाहै बिछै लाश पै लाश॥
आजादी के लिये मरिंगे, दीवाने भारत के लाल।
शेर सूरमाओं के आगैं, नहीं गलैगी इनकी दाल॥ [55]

इसी प्रकार 'प्रभुदास बैरागी' जी वीरों को सम्बोधित करते हुए लिखते हैं

बजा नगारा युद्ध का, सुनी धनुष टंकार।
गंगादास बख्तर पहिन, हुए वीर तैयार। [56]

इस प्रकार राजस्थान ब्रजभाषा कवियों ने वीरों का वर्णन करते हुए, युद्ध का वर्णन आदि करते हुए वीर रस में रचनाएँ रची।

भयानक रस

भयानक रस का स्थायी भाव भय है इस में भयानक वस्तु का वर्णन जिस से व्यक्ति भयभीत हो जाता है। भयानक द्रश्य, जीव आदि की चेष्टाए एवं उनके कार्य आदि उद्दीपन विभाव होंगे। कंप, स्वेद, रोमाँच, भाजना, भौचक्का होना अनुभाव तथा सभ्रम, आवेश, त्रास, शंका, दैन्य, चिंता आदि संचारी भाव है। 'श्री निवास बह्मचारी' जी ने होली जो की रंगों का खुशी का त्यौहार है उसी को अग्रेंजो द्वारा खेली गई खून की होली के द्रश्य के रूप में जिसमें बन्दूक को पिचकारी खून को रंग आग की लपटौ को गुलाल आदि को वर्णित करते हुए भयानक रस के रूप में लिखा है- उदाहरण द्रष्टाव्य है,

बम्बन के कुम कुमा चलै देस मांहि नित्य।
मारी बन्दूकन लेकें पिचाकीर छोरी है।
गन्धक पुटास लै अबीर की मचाई धूम।
आग की लपटन गुलाल झक झोरी है॥
'श्रीपति' लूट मार हुश्यार हुर्दंग करै।
जनता के जीवन की दुगर्ति न थोरी है।

मौत की धमार गावव पूजा की ठौरी ठग।

संत और मेहन्त खेलें खूनन की होरी है॥ [57]

इसी प्रकार 'प्रभुदास बैरागी' जी ने भयानक रस में इस प्रकार लिखा है।

चुप रह, गुप चुप काम करै, गुप चुप में संसार।

गंगादास चुप्पी रही, उतर जायगा पार॥[58]

इस प्रकार भयानक रस में कवियों ने भय के भावों को व्यक्त किया है।

इस के अलावा शान्त, विभत्स और अद्‌भूत रसों के अलावा कवियोंने भक्ति और वात्सल्य रसों के द्वारा भी अपने हृदय के विभिन्न मनोभावों को काव्य में व्यक्त किया। भक्ति काल में भक्ति, वात्सल्य और भक्तिपरक श्रृंगारिक काव्य की मात्रा अधिक मिलती है, जिसमें सूर, तूलसी, मीरा जैसे कवियों के भाँति कवियों ने अपने भावों को दर्शाया वही रीतिकाल में श्रृंगारिक नायक-नायिका की विभिन्न चेष्टाओं के वर्णन के साथ सयोंग वियोग की स्थिती को काव्य के द्वारा व्यक्त किया जिसमें नख-शिख वर्णन से शिख-नख वर्णन, आदि का समावेश किया गया। आधुनिक काल में इन परम्पराओं का निर्वाह करते हुए आधुनिक समस्याओं की काव्य में रचना हुई जिनमें कवियों ने करूण, रोद्र, वीर रसों का उपयोग करते हुए अपने विचारों को व्यक्त किया और सामाजिक चेतना का प्रयास किया अर्थात काव्य में भाव और रस दोनों का महत्व है और भावों की विविधता एवं रस का यत्किंचित् निरूपण ही काव्य ब्रजभाषा काव्य की महत्ता के प्रकट कर देता है।

*

सन्दर्भ सूची

1. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 300
2. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 94
3. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 71
4. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 40
5. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 99
6. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 192
7. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 176
8. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 202
9. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 260
10. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-12, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं.: 78
11. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं.: 40
12. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-14, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं.: 153
13. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. : 111
14. पुस्तक वही, सम्पादक वही, पृ. सं. 110
15. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग -3, सम्पादक : डॉ. विष्णुचंद्र पाठक, पृ. सं.2
16. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग 17, सम्पादक : गोपालप्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 259
17. पुस्तक वही, सम्पादक वही, पृ. सं. 264
18. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग -10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 201
19. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. 4
20. पुस्तक वही, सम्पादक वही, पृ. सं. 4
21. पुस्तक वही, सम्पादक वही, पृ. सं. 322
22. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 155
23. पुस्तक : छन्दशति, डॉ. विष्णु विराट, पृ. सं. 18
24. पुस्तक वही, सम्पादक वही
25. पुस्तक : कविरत्न नवनीत जीवन और काव्य सम्पादकः डॉ. नन्दलालचतुर्वेदी, पृ. सं. 176
26. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचंद्र पाठक, पृ. सं.232
27. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 155
28. पुस्तक वही, सम्पादक वही
29. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचंद्र पाठक, पृ. सं. 232
30. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 155
31. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचंद्र पाठक, पृ. सं. 232
32. पुस्तक : कविरत्न नवनीत जीवनी और काव्य, सम्पादक : डॉ. नन्दलाल चतुर्वेदी, पृ. सं. 166
33. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 156
34. पुस्तक : कविरत्न नवनीत जीवनी और काव्य, सम्पादक : डॉ. नन्दलाल चतुर्वेदी, पृ. सं. 171
35 पुस्तक : वही, सम्पदाक : वही, पृ. सं. 174

36. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 156
37. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुदग्ल, पृ. सं. : 225
38. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर , पृ. सं. 252
39. पुस्तक : वही, सम्पदाक : वही, पृ. सं. 263
40. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात् ब्रजभाषा साहित्यकार भाग -6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ.स. 259
41. पुस्तक : वही, सम्पदाक : वही, पृ. सं. 262
42. पुस्तक : हिन्दी का समस्यापूर्ति काव्य, सम्पादक : डॉ. दयाशंकर शुक्ल, पृ. सं. 336
43. पुस्तक : वही, सम्पदाक : वही, पृ. सं. 337
44. पुस्तक : वही, सम्पदाक : वही, पृ. सं. 340
45. पुस्तक : वही, सम्पदाक : वही, पृ. सं. 40
46. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात् ब्रजभाषा साहित्यकार भाग -6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ.स. 247
47. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल , पृ. सं. 02
48. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 301
49. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात् ब्रजभाषा साहित्यकार भाग -5 सम्पादक मोहनलाल मधुकर, पृ.सं. 174
50. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 35
51. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 101
52. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 176
53. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग -03, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. सं. 164
54. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 101
55. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 65
56. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 101
57. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, , पृ. सं. 98
58. पुस्तक : राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकार भाग 17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. सं. 101